हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

XII

सप्रसंग व्याख्या

जहाँ आदमी को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने-पीने, चलने-फिरने आदि की जरूरत है, वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यन्त आवश्यकता है। जो कुछ मवाद या धुँआ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिये भाप बनकर बाहर निकल पड़ता है।

सन्दर्भ - प्रसंग — प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगन्त' में संकलित 'बालकृष्ण भट्ट' के बात-चीत नामक निबन्ध से उद्धृत है। इ[illegible] पंक्तियों में व्यक्ति के जीवन में बात-चीत के महत्व को समझाया गया है।

व्याख्या — जिस प्रकार जीवन को आनन्दम एवं सुखी बनाने के लिए स्वादिष्ट भोजन पानी की आवश्यकता होती है और इनके जीवन एक क्षण भी नहीं चल सकता। [illegible]

प्रकार बातचीत भी जीवन के लिए एक अनिवार्य
तत्व है। इसके अभाव में भी व्यक्ति का जीवन
सुखी और आनन्दमय नहीं हो सकता। हाँ, वह
पशुओं की भाँति जीवित अवश्य रह सकता है।
ऐसे में जीवन की गतिशीलता मनुष्य जीवन-
का वास्तविक सुख आनन्द निहित है और
यह गतिशीलता चले-फिरे बिना संभव नहीं।
इस प्रकार खाना-पीना और चलना-फिरना जीवन
मूलभूत तत्व हैं और इनके बिना आनन्दमय
वन की कल्पना नहीं की जा सकती। ठीक इन्हीं
भाँति जीवन में बातचीत भी अत्यावश्यक है।
का कारण है कि व्यक्ति जीवन में सुखी और
न्दित तभी हो सकता है, जब उसके जीवन में
ी प्रकार का ईर्ष्या-द्वेष अथवा वैर-भाव न
हो। व्यक्ति एक बुद्धिवादी समाज में रहता है,
उसका दूसरे लोगों के साथ मतभेद होना
विक है। यही मतभेद ईर्ष्या-द्वेष और वैर
को जन्म देता है। व्यक्ति के मन में

Appointments

8.00 स्थित ये ईर्ष्या-द्वेष और वैर-भाव व्यक्ति को
उसी प्रकार पीड़ा पहुँचाते हैं, जिसप्रकार फोड़े में प
9.00 मवाद और घर में घुसा धुँआ व्यक्ति को पीड़ा
00 पहुँचाते हैं। इनको निकाले बिना व्यक्ति को पी
में आराम नहीं मिलता।

आगे लेखक कहता है कि व्यक्ति के मन
स्थित इस मवाद और धुँएरूपी ईर्ष्या-द्वेष को
निकालने का एकमात्र उपाय बात-चीत है क्यों
व्यक्ति अपनी बातचीत के द्वारा अपने मन क
ईर्ष्या-द्वेष को बाहर निकालकर स्वयं को हल्क
करता है। एक-दूसरे की शिकायतें भी बात
के द्वारा ही दूर हो पाती हैं। जब व्यक्ति को
से शिकायत नहीं होती और उसके मन में
प्रति ईर्ष्या-द्वेष और वैर-भाव भी नहीं हो
वह सबसे खुशी और आनन्दित होता है।
खान-पान और चलने-फिरने के समान ही
के लिए बातचीत अत्यावश्यक है।